International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 11 Issue 8 August. 2022 || PP. 65-69

राम मनोहर लोहियाः समाजवाद के मौलिक चिंतक

डॉ. ऋचा अंगिरा
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
श्री प्र.सिं.बा. राजकीय महाविद्यालय, शाहपुरा (भीलवाड़ा)

समाजवाद के विचार ने दुनिया को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। विचारधारा के रूप में समाजवाद का विचार भले कुछ सदी पुराना हो किंतु यह विचार बहुत पुराना है। त्यागपूर्ण भोग की बात दुनियाभर के गौरव ग्रंथों में अलग–अलग रूपों में कही गई है। मानव का ऐतिहासिक विकास क्रम भी बताता है कि परंपरागत समाजों में सामूहिकता का विचार मौजूद था। ज्यों–ज्यों आबादी बढ़ती गई समाज जटिल होते गए और समाज में व्यक्तिवाद प्रबल हुआ। शोषण और अन्याय के नये–नये रूप सामने आने लगे। इसी की प्रतिक्रिया स्वरूप समाजवाद का विचार आया जिसने समाज में सभी के लिए न्यायपूर्ण और गरिमामय जीवन के महत्त्व को रेखांकित किया। समाज में शोषण और अन्याय के विविध रूपों और उनके समाधान के तरीकों की भिन्नता के चलते समाजवाद के अलग–अलग मॉडल सामने आये जैसे–साम्यवाद, श्रेणी समाजवाद, फेबियन समाजवाद, श्रम संघवाद लोकतांत्रिक समाजवाद आदि। भारत में समाजवाद को उन चिंतकों के नाम के साथ भी पहचाना जाता है जिन्होंने समाजवाद का विचार दिया मसलन–गांधी का समाजवाद, लोहिया का समावाद आदि। राम मनोहर लोहिया को देसी समाजवादी कहा जाता है क्योंकि लोहिया ने शोषण और गैर–बराबरी के स्थानीय रूपों की पहचान की है। राम मनोहर लोहिया ने भारतीय संदर्भ में बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग के मायने ही बदल दिए। लोहिया ने एशियाई क्षेत्रों में सामंतवाद, राजशाही, जमींदारी, पितृसत्ता, जाति, अंग्रेजी आदि शोषण और विभेद की नई प्रवृतियों की पहचान की। मार्क्स की भांति लोहिया भी कोई कल्पना लोकी समाजवादी नहीं थे, लोहिया ने भी इतिहास के विकास क्रम में शोषण की प्रवृतियों की पहचान की है किंतु लोहिया ने मार्क्स और हीगल की तरह इतिहास का विकास द्वन्द्वात्मक नहीं मानकर चक्राकार मानते हैं। लोहिया के चिंतन पर गांधी के प्रभाव को इस रूप में भी देखा जा सकता है कि लोहिया सामाजिक ताने–बाने में बदलाव के लिए हिंसा पर नहीं अपितु सत्याग्रह पर बल देते हैं और कुटीर उद्योगों पर बल देते हैं। लोहिया के समाजवाद के दर्शन को हम बिन्दूवार प्रस्तुत कर रहे हैं :–

- महिला अधिकार का समर्थन–स्त्री विमर्श राम मनोहर लोहिया के समाजवाद के विचार का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। लोहिया की मान्यता है कि विश्व में दो ही वस्तुएं प्राप्त करने योग्य होती हैं– ईश्वर और स्त्री। यह पंक्ति स्त्रियों के प्रति लोहिया की श्रद्धा भाव को व्यक्त करती है। स्त्री मुक्ति के प्रबल हिमायती लोहिया सती सावित्री को नहीं अपितु द्रोपदी को भारतीय नारी के लिए आदर्श मानते हैं।[1] लोहिया ने सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका पर बल दिया। आजादी के बाद और आज तक भी प्रतिनिधि संस्थाओं में महिलाओं की कमजोर उपस्थिति के सवाल को लोहिया संसद से सड़क तक मजबूती से उठाते रहे। पितृसत्तात्मक व्यवस्था को लोहिया समाजवाद के मार्ग में बड़ी बाधा मानते थे। उन्हें लगता था कि नर–नारी में समानता के बिना समाजवाद के लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सकता। लोहिया मानते थे कि भारतीय नारी को सती सावित्रि की तरह नहीं होना चाहिए जो पति में परमेश्वर देखती हो और स्वयं को उसकी दासी समझती हो। भारतीय नारी को द्रोपदी की तरह होनी चाहिए जो समाज से सवाल कर सके। स्त्री विमर्श एक बेहतर अंजाम तक पहुंचे, इसके लिए स्त्रियों को निर्भिक, साहसी और सजग होना होगा। महिलाओं को पर्दाप्रथा, देवदासी प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि बुराइयों के विरूद्ध एकजुट होना चाहिए।

- भाषायी वर्चस्व को चुनौती–आम तौर पर लोहिया पर आरोप लगता है कि वे अंग्रेजी के विरोधी और हिन्दी के पैरोकार थे। यह बात आधी–अधूरी है। दरअसल लोहिया किसी भी भाषा के विरूद्ध नहीं थे अपितु भाषा के जरिए स्थापित वर्चस्व के विरोधी थे। भाषा संवाद का माध्यम है। सभी भाषाएं बराबर हैं और सभी भाषाओं को महत्त्व मिलना चाहिए। लोहिया की आपत्ति अंग्रेजी भाषा के बढते वर्चस्व और इसके सामंती रवैये को लेकर थी। लोहिया अंग्रेजी सीखने के खिलाफ नहीं थे। लोहिया खुद बहुत बेहतर ढंग से अंग्रेजी बोलते और लिखते थे। लोहिया ने कितनी ही पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में लिखी हैं। अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व को चुनौती की लोहिया की कोशिश को साधारणतया हिन्दी का समर्थक मान लिया जाता है किंतु लोहिया हिन्दी सहित भारत की तमाम क्षेत्रीय भाषाओं को पहचान और अवसर दिलाने के पक्षधर थे। लोहिया ने कभी भी हिन्दी के वर्चस्व की बात नहीं की। जब कोई भी भाषा संवाद के माध्यम से आगे बढकर समाज में अवसर की समानता के मार्ग में बाधा बन जाये तब भाषा समाज को जोड़ने की बजाय तोड़ने लगती है।[2] अंग्रेजी का वर्चस्व हमें औपनिवेशक विरासत से मिला है। लोहिया ने राष्ट्रीय आंदोलन से ही अंग्रेजी के वर्चस्व और इस से उपजने वाले खतरे को भांप लिया था। लोहिया ने आजादी के आंदोलन से लेकर स्वतंत्र भारत में अपनी मृत्यु तक अंग्रेजी के वर्चस्व का विरोध किया किंतु दुर्भाग्य से अन्य भाषाओं पर अंग्रेजी की श्रेष्ठता आज भी है और यह प्रवृति तेजी से विकराल होती जा रही है। आज भी नौकरशाही, सेना, न्यायपालिका, उच्च व तकनीकी शिक्षण संस्थानों में गैर अंग्रेजी भाषी लोगों के लिए अवसर बहुत सीमित हैं। ग्रामीण

क्षेत्रों से आने वाले और क्षेत्रीय भाषा बोलने वाले अभ्यर्थियों के लिए उच्च पदों पर काबिज होना बहुत मुश्किल है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण भारतीय प्रशासनिक सेवा का परिणाम है। आप देख सकते है कि आई.ए.एस. परीक्षा परिणाम में शुरूआती 100 रैंक में सिर्फ 10–15 गैर अंग्रेजी भाषी अभ्यर्थी जगह बना पाते हैं। भाषायी भेदभाव का सबसे बड़ा उदाहरण तो यह है कि पिछले 70 सालों में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी गैर अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी ने आई.ए.एस. की परीक्षा टॉप की हो। यह एक क्षेत्र में भाषायी भेदभाव का उदाहरण है। अन्य क्षेत्रों या विभागों में उच्च पदों का अध्ययन करेंगे तो हालात की गंभीरता को समझ पायेंगे। तो क्या यह निष्कर्ष निकाला जाये कि प्रतिभाशाली लोग केवल अंग्रेजी भाषा बोलने वाले ही होते हैं? दरअसल भाषा और विद्ववता का कोई सीधा संबंध नहीं है। ब्रिटेन में तो एक पागल भी अंग्रेजी बोलता है तो क्या हम उसे विद्वान मान लें? दरअसल प्रतिभाशाली लोग हर शहर, गाँव, ढाणियों और भाषा–भाषी क्षेत्रों में पैदा होते हैं। ईश्वर सबसे बड़ा समाजवादी है, वह प्रतिभाओं को हर जगह जन्म देता है। जिन समाजों में अवसर की समानता नहीं हैं वहाँ प्रतिभाओं का दमन हो जाता है। राम मनोहर लोहिया ने माना कि भारत में समाजवाद को लागू करने के लिए अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व को चुनौती देनी होगी। यह और बात है कि आज भी भारत में अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व कायम है और अवसर की समानता सीमित हो रही ळें

- चौखंबा सिद्धान्त :–(समाजवादी राज्य का मॉडल) लोहिया ने अपनी पुस्तक 'समाजवादी नीति के विविध पक्ष' (Aspects of socialist policy) के अंतर्गत चौखंबा सिद्धान्त के माध्यम से समाजवादी राज्य का मॉडल प्रस्तुत किया है। लोहिया ने गांव, मंडल, प्रान्त और देश को राज्य रूपी भवन के चार स्तंभ माने हैं। लोहिया का मत है कि राज्य का निर्माण इन चार स्तंभों में परस्पर तालमेल को ध्यान में रखकर किया जाएगा तो राज्य समुदाय का सच्चा प्रतिनिधि होगा।[2] राज्य के चारों स्तंभ अलग–अलग हो कर भी एक कृत्यात्मक संघ (Functional Federalism) के रूप में परस्पर मिलकर काम करेंगे। राज्य का चौखंभा सिद्धान्त केंद्रीकरण और विकेन्द्रीकरण की परस्पर विरोधी अवधाराणाओं में सामंजस्य स्थापित करेगा। लोहिया औपनिवेशक काल से चले आ रहे जिला कलेक्टर के पद को समाप्त कर देना चाहते हैं क्योंकि वह शक्ति का केन्द्रीकरण करता है। गांव और नगर पंचायतों को यह दायित्व दिया गया कि वे पुलिस और जन कल्याण के कार्यों को देखें। ग्रामीण स्तर पर कुटीर उद्योगों को बढावा दिया जाएगा जो सहकारी संस्थाओं के रूप में निर्मित होंगे। कुटीर उद्योगों का यह मॉडल ग्रामीण क्षेत्रों में बढती बेरोजगारी को दूर करने का माध्यम होगा। राम मनोहर लोहिया अपने समाजवादी मॉडल को केवल भारत या एशिया तक ही सीमित नहीं रखना चाहते थे अपितु उसे विश्व स्तर पर ले जाना चाहते थे। लोहिया चाहते थे कि विश्व संसद और विश्व सरकार का निर्माण हो जो पूरी दुनिया में समाजवादी आदर्शों की स्थापना करे।

- एशियाई परिस्थितियों में समाजवाद का विश्लेषण–राम मनोहर लोहिया ने माना की एशियाई समाजों में शोषण की प्रवृतियां यूरोपीय समाजों से भिन्न हैं। यूरोप में पूंजीवादी प्रवृतियां शोषण के लिए उत्तरदायी हैं किंतु एशियाई समाजों में पूंजीवाद शोषण की वजह नहीं हैं अपितु यहाँ सदियों पुराना निरंकुश राजतंत्र और सामंतवाद आदि अन्याय की प्रमुख वजह हैं। एशियाई समाजों मे धर्म की भूमिका राजनीति में बहुत गहरी है जिससे राजनीतिक अस्थिरता का माहौल बना रहता है। राजनीतिक हत्याएं भी हो जाती हैं। राजनीति में धर्म के प्रभाव से एक ऐसे नेतृत्व का उदय हो रहा है जो जन भावनाओं को उद्वेलित कर सत्ता में बना रहना चाहता है। एशिया के नव लोकतांत्रिक देशों में नौकरशाही के बढते प्रभाव को लोहिया एक नई किस्म की समस्या के रूप में देखते हैं। लोहिया का मानना है कि नौकरशाही का बढता प्रभाव जन पर तंत्र के हावी होने का संकेत है। जो लोकतंत्र के बुनियादी उसूलों के विरूद्ध है। लोहिया का मानना है कि एशियाई समाजों में समाजवादी मूल्यों की स्थापना के लिए इन तमाम तरह की प्रवृत्तियों से लड़ना होगा और उन्हें कमजोर करना होगा।

- इतिहास की चक्रीय क्रम में व्याख्या–अपनी पुस्तक 'व्हील ऑफ हिस्ट्री' में लोहिया ने इतिहास की व्याख्या प्रस्तुत की है। लोहिया मानते हैं कि इतिहास द्वन्द्वात्मक शैली से नहीं अपितु चक्र की गति से आगे बढता है। हेगेल जहाँ इतिहास के विकास में विचार तत्त्व (Idea) की बात करते हैं वहीं मार्क्स ऐतिहासिक विकास क्रम में आर्थिक शक्ति की भूमिका को समझाते हैं किंतु लोहिया ने जाति और वर्ग को ऐसी शक्ति के रूप में पहचाना है जो इतिहास को गति देते हैं। लोहिया मानते है कि जाति और वर्ग में टकराव और खींचतान चलती रहती है और इसी टकराव के साथ इतिहास आगे बढता है। जहाँ जाति एक रूढिवादी शक्ति है जो ज़डता या परंपरावाद को बढावा देती है जबकि वर्ग एक गतिशील शक्ति है जो समाज में गतिशीलता को बढावा देती है। आप अपनी जाति को बदल नही सकते किंतु वर्ग में बदलाव कर सकते हैं। जिस तरह काल मार्क्स आज तक के इतिहास को वर्ग संघर्ष के रूप में देखते हैं उसी तरह लोहिया आज तक के इतिहास को जातियों और वर्गों के निर्माण और विलय के रूप में देखते है। जातियां कमजोर होकर वर्गों का रूप धारण कर लेती हैं और वर्ग मजबूत होकर जातियों का रूप धारण कर लेते हैं।[3] इस तरह इतिहास जाति और वर्ग के अंतरण के बीच झूलता रहा है।

- सामंतशाही का विरोध–राम मनोहर लोहिया अनुचित विशेषाधिकारों के खिलाफ जीवन भर लड़ते रहे। ये विशेषाधिकार जमींदारों के खिलाफ हों या सामंतो के खिलाफ....लोहिया ने किसी को नहीं बख्शा। लोहिया ने सामंती व्यवस्था को शोषण की धुरी बताया। सामंत लोग जनता की मेहनत की कमाई को कर का नाम देकर लूट लेते हैं और स्वयं विलासिता का जीवन जीते हैं। लोहिया का मत है कि भारत में समाजवाद की स्थापना के लिए केवल सामंतशाही का अंत की काफी नहीं हैं अपितु सामंती सोच या प्रवृति का उन्मूलन होना बहुत अहम है। जब तक नागरिकों में अपने नागरिक होने का एहसास पैदा नहीं होगा तब तक नागरिक समानता के विचार को सामंती प्रवृतियां पीछे धकेलती रहेंगी। सामंतशाही की तरह ही लोहिया ने जमींदारी व्यवस्था को भी शोषणकारी और भेदमूलक माना है। भारत गाँवों का देश है। यहाँ कृषि ही आजीविका का मुख्य माध्यम है। ऐसे में जब भूमि का न्यायपूर्ण वितरण नहीं होगा तो समाज में आर्थिक विषमता का अंत कैसे होगा। लोहिया भूमि सुधारों की पैरवी स्वतंत्रता आंदोलन से ही कर रहे थे। लोहिया कहते थे कि जमीन पर जोतने और बोने वाले का अधिकार होना चाहिए। इसी तरह के हक की बात लोहिया कारखानों में मजदूरों के लिए भी करते थे।[4] लोहिया एक ऐसे विलक्षण समाजवादी थे जो उत्पादन और वितरण, दोनों स्तर पर नियमन चाहते थे। लोहिया ने पं. नेहरू के प्रतिदिन खर्च के आंकड़े को निकालकर इस बहस को जन्म दिया कि इस देश के अमीर से अमीर और गरीब से गरीब व्यक्ति की आय में अधिकतम अंतर कितना होना चाहिए। लोहिया मानते थे कि सबसे गरीब व्यक्ति और सबसे अमीर व्यक्ति की आय का अंतर एक अनुपात दस का हो, तब तो ठीक है किंतु इस से ज्यादा है तो चिंता की बात है। इसी तरह के अनुपात की बात लोहिया भूमि के स्वामित्व को लेकर भी करते है। लोहिया मानते हैं कि किसी के पास अधिकतम और न्यूनतम भूमि का अंतर एक और तीन के अनुपात से अधिक नहीं होना चाहिए। गंभीर आर्थिक विषमता सामाजिक न्याय और शांति के मार्ग में बड़ी बाधा है।

- मानवतावाद एवं विश्वबंधुत्व का समर्थन–राम मनोहर लोहिया वैश्विक मूल्यों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता रखते थे। वे मानते थे कि शांति और न्याय का मुद्दा केवल किसी देश का मुद्दा नहीं है अपितु दुनिया का मुद्दा है। समग्र दुनिया शोषण और अन्याय से मुक्त होनी चाहिए। लोहिया ने अपने सप्त क्रान्ति सिद्धान्त में न्यायपूर्ण दुनिया का रोडमैप भी प्रस्तुत किया है। लोहिया ने रंगभेद और प्रजाति भेद के उन्मूलन की बात की है। उपनिवेशवाद के साथ रंगभेद दुनिया के एक बड़े हिस्से में व्याप्त हुआ और इसे थोड़े बहुत रूप में आज भी देखा जा सकता है। लोहिया मानते थे कि किसी व्यक्ति को रंग के आधार पर दोयम दजे पर धकेलना मानवता के विरूद्ध क्रूर अपराध है। प्रजातिवाद का सबसे वीभत्स और खतरनाक रूप दुनिया ने हिटलर के दौर में जर्मनी में देखा था। प्रजातिवाद को हवा देकर हिटलर ने जर्मन समाज को बंटवा दिया और लड़वा दिया। लाखों यहूदी प्रजातीय संघर्ष की भेंट चढ़ गए थे। इसीलिए लोहिया मानते थे कि दुनिया में समरसता और भाईचारे के विकास के लिए रंगभेद और प्रजातिवाद जैसी प्रवृतियों का उन्मूलन बहुत जरूरी है। लोहिया ने विदेशी गुलामी के विरूद्ध और स्वतंत्रता तथा विश्व लोकराज्य की स्थापना के लिए भी क्रांति का आह्वान किया है। राम मनोहर लोहिया ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी और वे दुनिया भर में शोषित देशों को अपना वैचारिक समर्थन देते थे। लोहिया का स्पष्ट मत था कि उपनिवेशवाद जैसी प्रवृतियों के उन्मूलन से ही हम न्यायपूर्ण दुनिया का निर्माण कर सकते हैं। लोहिया चाहते थे कि दुनिया एक विश्व राज्य में एकीकृत हो जाये और एक विश्व सरकार अस्तित्व में आ जाये जो न केवल राष्ट्र–राज्यों के मनमाने व्यवहार को नियंत्रित करे अपितु दुनिया भर में शोषणमूलक प्रवृतियों को रोके। सप्त क्रान्ति सिद्धान्त में ही लोहिया ने अस्त्र–शस्त्र के विरूद्ध और सत्याग्रह के लिए क्रान्ति का आह्वान किया है। लोहिया दुनिया में निःशस्त्रीकरण के प्रबल पैरोकार थे। लोहिया समझते थे कि दुनिया में अमन के लिए व्यापक विनाश के हथियारों की होड़ को रोकना बहुत जरूरी है। जापान का उदाहरण सामने था जहाँ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अणु बम गिराया गया और दो शहर तबाह हो गए थे। लोहिया ने शीतयुद्ध के शुरूआती दो दशक में महाशक्तियों के मध्य हथियारों की होड़ भी देखी थी। संभवतया लोहिया ने इन तमाम अनुभवों को ध्यान में रखकर ही दुनिया में अस्त्र–शस्त्र के विरूद्ध क्रान्ति का आह्वान किया। लोहिया भारत और पाकिस्तान के मध्य एक संघ बनाने का विचार भी रखते थे ताकि विभाजन के बाद भी दोनों देशों को करीब लाया जा सके। यह लोहिया का अंतरराष्ट्रवाद है जो युद्ध के क्षेत्रों को शान्ति के क्षेत्र में बदल देना चाहते थे। इस तरह लोहिया की विश्व शांति, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और मानवतावाद के प्रति गहरी प्रतिबद्धता थी।

- कांग्रेस की एकदलीय प्रभुत्व की व्यवस्था को चुनौती–गैर कांग्रेसवाद राजनीतिक शब्दावली का प्रयोग सबसे पहले राम मनोहर लोहिया ने किया। पचास और साठ के दशक में यह राजनीति शब्दावली बहुत लोकप्रिय रही। कभी कभार आज भी कांग्रेस मुक्त भारत के प्रयास में कुछ नेता लोहिया के गैर कांग्रेसवाद को जोड़ने की कुटिल कोशिश करते हैं, जो सही नहीं है। कांग्रेसवाद से अभिप्राय था केन्द्र और राज्यों की राजनीति में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वर्चस्व। गैर कांग्रेसवाद का विचार दरअसल वर्चस्व की राजनीति को तोड़ने के लिए इजाद हुआ था। लोहिया का मत था कि भारत में लोकतंत्र को बचाने के लिए एक बार कांग्रेस को सत्ता से बेदखल करना जरूरी है। लोहिया को लगता था उस समय की कांग्रेस में जड़ता और अहंकार आ गया था, सत्ता का गुरूर छा गया था और उसकी नीतियां और कार्यक्रम इस देश के समावेशी लक्ष्य दूर होते जा रहे थे। नेहरू के दौर में विपक्ष हासिए पर था उस समय की कांग्रेस को लगता था कि वे सत्ता से कभी बेदखल नहीं होंगे। उस दौर की कांग्रेस महज चालीस प्रतिशत के आस–पास मत लाकर केन्द्र और राज्य में सत्तासीन थी। लोहिया समझते थे कि यदि कांग्रेस विरोधी मत एकजुट

हो जाएं तो कांग्रेस को सत्ता से बेदखल किया जा सकता है। कांग्रेस विरोधी मतों और पक्षों को एकजुट करने के लिए लोहिया ने गैर कांग्रेसवाद का नारा दिया था। लोहिया ने इसके लिए गैर कांग्रेसी दलों को एकजुट किया और नेहरू के खिलाफ फूलपुर लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा। वर्ष 1967 के आम चुनाव में लोहिया का गैर कांग्रेसवाद का अभियान कुछ हद तक रंग लाया। वर्ष 1967 के चौथे आम चुनाव को राजनीतिक विश्लेषक राजनीतिक भूकंप की संज्ञा देते हैं। इस चुनाव में कांग्रेस की राजनीतिक शक्ति घटी थी। कई राज्यों में कांग्रेस सरकार से बाहर हो गई थी। केन्द्र में भी कांग्रेस का जनसमर्थन पूर्ववर्ती चुनावों की तुलना में घटा। यद्यपि लोहिया का गैर कांग्रेसवाद का विचार वर्ष 1977 में छठे आमचुनाव में समग्र रूप से फलीभूत हुआ, जब आपातकाल के बाद उपजी कांग्रेस विरोधी लहर के कारण कांग्रेस केन्द्र और राज्य दोनों जगह से बेदखल हुई। यह वह समय था जब जनता पार्टी के नेतृत्व में केन्द्र में पहली गैर कांग्रेसी सरकार बनी। यह और बात है कि जब गैर कांग्रेसवाद का विचार चरम पर था तब लोहिया इस दुनिया में नहीं थे।

- साम्प्रदायिकता का प्रबल विरोध–राम मनोहर लोहिया पर उनके विरोधी आरोप लगाते हैं कि लोहिया ने भारत में दक्षिणपंथी हिन्दुत्त्व की राजनीति को आगे बढ़ने में मदद की थी। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि एक समय राम मनोहर लोहिया ने कांग्रेस के वर्चस्व को चुनौती देने के लिए भारतीय जनसंघ के बड़े नेता दीनदयाल उपाध्याय से हाथ मिलाया था और दीनदयाल उपाध्याय उसी राजनीतिक विरासत से आते हैं जो हिंदुत्त्व का पोषण करती है। दीनदयाल उपाध्याय से राम मनोहर लोहिया के हाथ मिलाने की बात एक तथ्य है किंतु उससे भी बड़ा तथ्य और सत्य यह है कि राम मनोहर लोहिया जीवन भर सामाजिक सद्भाव और धर्मनिरपेक्षता के विचार की पैरवी करते रहे। लोहिया गांधी के अनुयायी थे। आजादी और भारत विभाजन के समय उत्पन्न साम्प्रदायिक दंगो को शांत करने के लिए राम मनोहर लोहिया महात्मा गाँधी के साथ नोआखली की यात्रा पर थे। एक स्वयंसेवक के रूप में लोहिया गांधी के शांति अभियानों में सहायक रहे। लोहिया भारत विभाजन के विरोधी थे, उन्होनें अपनी पुस्तक 'भारत विभाजन के दोषी' में भारत विभाजन के लिए कई पक्षों या कारकों को उत्तरदायी माना है। उनमें से एक कारक जिन्ना और सावरकर की कम्युनल पॉलिटिक्स भी है। लोहिया न केवल हिन्दु–मुसलमान अपितु भारत और पाकिस्तान को करीब लाने के हिमायती रहे हैं। लोहिया सेकुलरिज्म को भारत का स्वधर्म मानते थे अर्थात् भारत सेकुलरिज्म के बिना जिंदा नहीं रह सकता। भारत की ताकत और पहचान उसकी बहुल सांस्कृतिक परंपरा है। लोहिया ने जीवन भर इस परंपरा का निर्वहन किया। सभी समुदायों के लोग लोहिया के साथ मिलकर काम करते थे। राम मनोहर लोहिया ने भारत के लिए जिस देशी या ठेठ समाजवाद की कल्पना की है उसमें पंथनिरपेक्षता का स्थान बहुत अहम है। लोहिया मानते थे कि अल्पसंख्यकों को दोयम दर्जे पर रखकर कभी भी एक न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज की रचना नहीं की जा सकती। यदि आज लोहिया होते तो साम्प्रदायिक राजनीति और धर्म आधारित छद्म राष्ट्रवाद की मुखालफत करते।

- कुटीर उद्योगों की जरूरत पर बल–राम मनोहर लोहिया गाँधी के बाद संभवतया दूसरे ऐसे विचारक थे जिन्होनें भारत में कुटीर उद्योगों के महत्त्व को इतनी प्रबलता से रेखांकित किया। व्यापक स्तर पर बड़े कल–कारखानों के लोहिया बहुत हिमायती नहीं थे। सीमित स्तर पर बड़े कल कारखाने स्थापित भी किए जाते हैं तो उनके प्रबंधन में श्रमिकों की भूमिका को बहुत जरूरी मानते थे। कुटीर उद्योगों के प्रति लोहिया की दिलचस्पी इस रूप में थी कि कुटीर उद्योगों से बेरोजगारी की समस्या का हल होता है। कोई भी सरकार सभी लोगों को सरकारी नौकरी नहीं दे सकती। भारत गांवों का देश है जहाँ संयुक्त परिवार की परंपरा है वहाँ कुटीर उद्योगों का विकास बहुत सहज है। लोहिया इस बात को लेकर बिल्कुल स्पष्ट थे कि भारत में आर्थिक स्तर पर समाजवाद के लक्ष्य को कुटीर उद्योगों के जरिए ही हासिल किया जा सकता है।[5] यद्यपि लोहिया का आर्थिक समाजवाद केवल कुटीर उद्योगों पर नहीं टिका है अपितु जमींदारी प्रथा का उन्मूलन भी एक पक्ष था। किंतु आर्थिक विकेन्द्रीकरण के लिए कुटीर उद्योगों का विकास बहुत जरूरी है। राम मनोहर लोहिया ने मौजूदा आर्थिक प्रणालियों का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष दिया है कि विश्व की दो तिहाई आबादी के लिए साम्यवादी और पूंजीवादी दोनों व्यवस्थाएं महत्त्वहीन हैं। इन दोनों प्रणालियों के अंतर्गत बड़ी–बड़ी मशीनों का प्रयोग और बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है जो आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के केंन्द्रीकरण को जन्म देता है। उत्पादन की इन प्रणालियों से व्यक्ति की स्वतंत्रता का दमन होता है। एशियाई देशों की श्रम शक्ति के पूर्ण उपयोग के लिए छोटी–छोटी मशीनों के प्रयोग और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना जरूरी है इस तरह लोहिया ने आर्थिक और राजनीतिक विकेंद्रीकरण के लिए गांधीवादी ढंग के संगठन का समर्थन किया है। दुर्भाग्य से कुटीर उद्योगों को लेकर गांधी और लोहिया के प्रबल प्रयास के बाद भी इनका व्यापक विकास नहीं हो पाया। नब्बे का दशक आते–आते तो हम बड़े कल कारखानों की ओर बहुत तेजी से बढ़ गये और कुटीर उद्योगों का विचार बहुत पीछे छूट गया। इन सबका प्रयास यह हुआ कि आज आर्थिक विषमता खतरनाक स्तर पर पहुंच गई। देश की धन संपदा का एक बड़ा हिस्सा चुनिंदा उद्योगपतियों के पास सिमट का रह गया है। देश में करीब पचास करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसर करने के लिए मजबूर हैं। आज लोहिया होते तो अड़ानी–अम्बानी की अकूत संपति और बी.पी.एल. परिवारों के मध्य आर्थिक विषमता को सियासी विमर्श का हिस्सा बनाते। बढ़ती बेरोजगारी पर सवाल खड़ा करते।

लोहिया के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चिंतन की जरूरत हर दौर की पीढ़ी को है। जब तक समाज में वर्चस्ववाद कायम रहेगा लोहिया को लोकमंचों से याद किया जाता रहेगा। समाज में विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग ने लोहिया पर कई आरोप लगाये मसलन–लोहिया अंग्रेजी के विरोधी थे, लोहिया उच्च जातियों के विरोधी थे उन्होंने अतार्किक होकर किसी का विरोध नहीं किया। लोहिया जीवन के हर क्षेत्र में वर्चस्ववाद के विरोधी थे क्योंकि वर्चस्ववाद अपने साथ गैर–बराबरी और उत्पीड़न लेकर आता है। लोहिया किसी जाति के विरोधी नहीं थे अपितु जाति विशेष के वर्चस्व के विरोधी थे, लोहिया कांग्रेस के विरोधी नहीं थे अपितु एक दौर में कांग्रेस के वर्चस्व के विरोधी थे, लोहिया अंग्रेजी के विरोधी नहीं थे बल्कि अंग्रेजी के सामंती रूप के विरोधी थे। इस तरह जब समाज में वर्चस्ववाद खड़ा होगा तब लोहिया का चिंतन समाज के कमजोर वर्ग के लिए ढ़ाल बनेगा।

संदर्भ सूची–

1. प्रो. आनंद 'लोहिया के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता' https://youtu.be/R3xfcVh84Ew
2. डॉ. पुरूषोत्तम नागर 'भारतीय राजनीतिक विचारक' हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, दूसरा संस्करण– 2010, पृष्ठ सं. 253
3. ओम प्रकाश गाबा 'भारतीय राजनीतिक चिंतक' मयुरबख्श प्रकाशन, दिल्ली, पाँचवा संस्करण–2013, पृष्ठ सं.–178
4. डॉ. श्रीराम वर्मा 'भारतीय राजनीतिक विचारक' कॉलेज बुक सेन्टर, चौड़ा रास्ता जयपुर, तृतीय संस्करण–2017,पृष्ठ सं. 483.
5. योगेन्द्र यादव 'यदि आज लोहिया होते' द क्विंट के डिजिटल प्लेटफार्म पर वीडियो, लोहिया जयंति पर विशेष। https://youtu.be/eSCZywwuX_g
6. अंजली वैष्णव, 'लोहिया के चिंतन में स्त्री विमर्श' सामाजिक विमर्श, अंक–04, वर्ष 2021, पृष्ठ सं. 45–47.
7. अवधेश कुमार, 'युग दृष्टा लोहिया' कुरूक्षेत्र, वर्ष 65 अंक–11, सितम्बर–2019, पृष्ठ सं. 18–19.
8. रेहान फजल, 'जब लोहिया ने नेहरू को चुनौती दी', बीबीसी, हिन्दी सेवा, 14 नवम्बर, 2017.